करामत किसे केहते हे?

हजरत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

हदीस के इस्लाही मजामीन उर्दू से इस्का खुलासा लिप्यान्तरण किया हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

एहले सुन्नत वल जमात का अकीदा हे के अल्लाह के वलीयो की करामते हक हे अल्लाह के नैक बन्दो के हाथो अल्लाह की तरफ से उन्के एज़ाज और इकराम के तौर पर कभी ऐसी चीझे वुजूद मे लाई जाती हे जो आदत के खिलाफ होती हे उसीको करामत से ताबीर किया जाता हे, अल्लाह कुरान शरीफ सूरे युनुस आयत ६२,६३ मे फरमाते हे जिस्का तर्जुमा ये हे सुनो अल्लाह के जो नैक बन्दे हे इनपर न कोई डर हे और न वो गमगीन होगे.वलीउल्लाह कौन हे तो कुरान ही बतलाता हे के जो लौग अल्लाह पर इमान लाये और अल्लाह की नाफरमानीयो से बचते हे ऐसे लौगो के लिये दुन्यवी जिन्दगी और आखिरत मे खुशखबरी हे अल्लाह के कलीमात और फैसलो मे कोई तब्दीली नही यही सब्से बडी कामीयाबी हे.

अल्लाह का करीबी और अल्लाह का दोस्त जो लौग अल्लाह की इतअत मे इस तरह लगे रेहते हे के उन्से कभी अल्लाह की नाफरमानी नही होती और जो हमेशा अल्लाह की याद मे मशगूल रेहते हो वो ही अल्लाह के वली केहलाते हे.

दुनीया मे जितनी भी चीझे मौजूद हे उन सब्का अपना वुजूद बरकरार रखने के लिये अल्लाह की ज़ात के साथ एक तरह की निस्बत और ताल्लुक काइम हे ये भी निस्बत का एक दर्ज़ा हे जो हर एक चीझ को हासिल हे लेकीन यहा नजदीकी और निस्बत का एक मख्सूस दर्ज़ा मुराद हे.

जो आदमी को अल्लाह की इतअत और फरमाबरदारी करने और अल्लाह की नाफरमानीयो से अपने आपको बचाने के नतीजे मे अल्लाह का साथ हासिल होता हे उन्ही के लिये फरमाया गया के अल्लाह के ऐसे बन्दे जो हमेशा अपने आपको अल्लाह की इतअत और फरमाबरदारी मे लगाये रखते हे और अल्लाह की नाफरमानीयो से अपने आपको

बचाते हे इनपर न कोई खौफ होगा और न वो गमगीन होगे.

अब अगर ये जन्नत मे पहुंचने के बाद की हालत का तजकीरा हे तब तो बात बिलकुल वाज़ेह हे के वहा पर न कोई खौफ होगा और न गम होगा, और अगर दुनीया की हालत का तजकीरा हे तो मतलब ये हे के दुनीया वाले दुनीया के वकती और मामूली नुकसान के नतीजे मे या नुकसान के पैश आने के खतरात से खौफ और गम महसूस करते हे अल्लाह के मख्सूस बन्दो को दुनीया की इन चीझो के नुकसानात की वजह से ऐसा कोई गम नही होता और न वो उस किसम का खौफ करते हे.

इस्से मालूम हूवा के अल्लाह की नाफरमानी से बचना विलायत के लिये जरूरी हे अल्लाह की नाफरमानी का इरतिकाब करते हूवे कोई आदमी अल्लाह का वली नही बन सकता इसीलीये कहा गया हे के सब्से बडी करामत इस्तीकामत यानी शरीअत की पाबन्दी हे और यही असल मतलूब हे.

अगर कोई आदमी अपनी पूरी जिन्दगी अल्लाह की इतअत मे लगा रहा और अल्लाह की नाफरमानीयो और गुनाहो से बचता रहा तो फिर चाहे जिन्दगी भर उस्के हाथ पर किसी करामत का जहूर नहो तब भी कोई बात नही हे इसलीये के असल चीझ तो दीन पर जमना और सुन्नत के मुताबिक अमल करना हे.

अगर कोई आदमी हवा मे उडता हो और पानी पर चलता हो लैकीन उस्की जिन्दगी नबी करीमﷺ के लाये हूवे दीन और सुन्नत के मुताबिक नही हे तो उस्का हवामे उडना और पानी पर चलना कार आमद नही दीन पर मजबूती के साथ जमना और सुन्नत के मुताबिक अमल करना हर करामत से बडकर हे, अब अगर किसी नबी पैगम्बर और रसूल के हाथो खिलाफे आदत किसी चीझ का जुहूर हो तो वो मोजिज़ा केहलाता हे और किसी गैर नबी अल्लाह के नैक बन्दे के हाथो अगर खिलाफे आदत किसी चीझ का जुहूर हो तो वो करामत केहलाती हे.